

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 3: श्रीकृष्ण का जन्म

14 September 2026



अर्धरात्रि के सबसे गहन प्रहर में, एक कारागार की कोठरी में, परम भगवान् वसुदेव और देवकी के समक्ष प्रकट होते हैं — चतुर्भुज और तेजोमय — और श्रीकृष्ण का चिर-प्रतीक्षित अवतरण अन्ततः घटित होता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गडम् में पुनः आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में परम भगवान् देवकी के गर्भ में प्रविष्ट हुए थे, उनका कारागार एक अलौकिक तेज से भर उठा था, और देवगण उतरकर गर्भ-स्तुति अर्थात् गर्भस्थ भगवान् का स्तवन गाने लगे थे। अब वह क्षण आता है जिसकी ओर सम्पूर्ण स्कन्ध बढ़ रहा था। इस तृतीय अध्याय में समस्त सृष्टि अर्धरात्रि के प्रहर में स्थिर और मनोहर हो उठती है; परम भगवान् वसुदेव और देवकी के समक्ष अपने चतुर्भुज रूप में प्रकट होते हैं; दोनों माता-पिता विस्मय और प्रेम से उनकी स्तुति करते हैं; भगवान् अपने पूर्व अवतरणों का स्मरण कराते हुए उन्हें उपदेश देते हैं; और, स्वयं को एक साधारण शिशु में परिणत करके, वे सोए हुए पहरेदारों के बीच से उमड़ती यमुना को पार कर गोकुल पहुँचाए जाते हैं। यह दिव्य अवतरण का अध्याय है — श्रीकृष्ण-जन्म।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 3 (तृतीय अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित से कहते हुए); और आगे सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य के ऋषियों से कहा गया
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित (शुकदेव की कथा के भीतर); नैमिषारण्य में एकत्र ऋषिगण
- मुख्य स्थल: मथुरा में कंस का कारागार-भवन; रात्रि में बाढ़ग्रस्त यमुना नदी; तथा व्रज में नन्द का गोप-ग्राम गोकुल
- केन्द्रीय विषय: परम भगवान् श्रीकृष्ण का अवतरण; वसुदेव और देवकी की स्तुति; भगवान् द्वारा अपने पूर्व अवतरणों का स्मरण; तथा उनकी रात्रिकालीन गोकुल-यात्रा
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 10, अध्याय 3, श्लोक 1-53
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

द्वितीय अध्याय में भगवान् का अंश-रूप अनन्त देवकी के गर्भ से रोहिणी के गर्भ में स्थानान्तरित हुआ, जो बलराम के नाम से जाने जाएँगे, और स्वयं परम भगवान् देवकी के गर्भ में प्रविष्ट हुए। उनके तेज से भयभीत होकर कंस निद्राहीन कठोर पहरा देने लगा। ब्रह्मा और शिव के नेतृत्व में देवगण कारागार में एकत्र हुए और गर्भ-स्तुति अर्पित की, भगवान् की सत्य-रूप में शरण लेते हुए, और देवकी को यह आश्वासन देते हुए कि उनका पुत्र यदुवंश का रक्षक होगा। यह अध्याय उस वचन को उसकी पूर्णता तक ले जाता है।

अवतरण का शुभ मुहूर्त

श्रीशुकदेव वर्णन करते हैं कि किस प्रकार सम्पूर्ण विश्व ने अवतरण के लिए स्वयं को तैयार किया। वह परम मनोहर मुहूर्त आया, समस्त कल्याणों से युक्त, जब रोहिणी नक्षत्र उदित था और सभी ग्रह-नक्षत्र सौम्य, शुभ दृष्टि धारण किए हुए थे। दिशाएँ स्वच्छ और प्रसन्न हो उठीं, मानो वर्षा-ऋतु के समाप्त होने से पूर्व ही शरद् आ गई हो, और आकाश असंख्य तारों से निर्मल होकर चमकने लगा। नगरों, गाँवों, गोशालाओं और खानों सहित पृथ्वी उत्सव से भर उठी।



अवतरण के शुभ मुहूर्त पर आकाश स्वच्छ हो जाता है, तारे सौम्य चमकते हैं, नदियाँ निर्मल बहती हैं, कमल खिलते हैं, और यमुना से सुगन्धित वायु बहती है जब समस्त सृष्टि शान्त हो उठती है (श्लोक 1-7)।

नदियाँ स्वच्छ और निर्मल बहने लगीं; तालाब कमलों से खेल उठे; पुष्पित वन-वृक्षों की पंक्तियाँ पक्षियों के मधुर स्वर और भ्रमरों के गुंजार से गूँज उठीं। पवित्र यमुना की दिशा से एक मधुर सुगन्ध लिए हुए एक पावन वायु स्पर्श में सुखद बहने लगी। कंस के अत्याचार में बुझ चुकी द्विजों की यज्ञ-अग्नियाँ स्वयं ही प्रज्वलित हो उठीं। चिर-पीड़ित सज्जनों के मन शान्त हो गए। जैसे ही अजन्मा भगवान् जन्म लेने को हुए, स्वर्ग में स्वयमेव नगाड़े बज उठे, किन्नर और गन्धर्व गाने लगे, सिद्ध और चारण स्तुति करने लगे, और अप्सराएँ नृत्य करने लगीं जबकि ऋषि और देवगण पुष्पवृष्टि करने लगे और सौम्य मेघ समुद्र-सा मन्द गर्जन करने लगे।

परम भगवान् का प्रादुर्भाव

तब, अर्धरात्रि के सबसे गहन प्रहर में, अन्धकार से आवृत, और जब संसार की प्रार्थनाएँ उनके अवतरण के लिए उठ रही थीं, भगवान् विष्णु — प्रत्येक हृदय के अन्तर्यामी — देवी-सदृश रूप धारण करने वाली देवकी के द्वारा अपनी पूर्णता में प्रकट हुए, ठीक वैसे ही जैसे पूर्ण चन्द्र पूर्व क्षितिज पर उदित होता है।

निशीथे तमउद्भूते जायमाने जनार्दने । देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशयः । आविरासीद् यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः ॥ ८ ॥

*niśīthe tama-udbhūte jāyamāne janārdane devakyām deva-rūpiṇyām viṣṇuḥ sarva-guhā-śayaḥ
āvirāsīd yathā prācyām diśīndur iva puṣkalaḥ*

अर्थ: घोर अर्धरात्रि में, सघनतम अन्धकार में, जब भगवान् जनार्दन ने जन्म लिया, तब समस्त हृदयों में गुप्त रूप से निवास करने वाले विष्णु देवी-सदृश देवकी के द्वारा प्रकट हुए, ठीक वैसे ही जैसे पूर्व दिशा में पूर्ण चन्द्रमा उदित होता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 3, श्लोक 8)

वसुदेव का चतुर्भुज भगवान् का दर्शन

वसुदेव ने कमल-सदृश नेत्रों वाले उस अद्भुत शिशु को निहारा। उन्होंने भगवान् को चार भुजाओं से युक्त देखा, शंख, गदा और चक्र धारण किए हुए; वक्षस्थल पर श्रीवत्स के चिह्न से और कण्ठ पर देदीप्यमान कौस्तुभ मणि से सुशोभित; पीत रेशमी वस्त्र धारण किए और जलपूर्ण मेघ के समान सुन्दर; उनके घने केश रत्नजटित मुकुट और वैदूर्य कुण्डलों की आभा में स्नात; उत्कृष्ट करधनी, बाजूबन्द और कंगनों से देदीप्यमान।

तमद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणं चतुर्भुजं शङ्खगदाद्युदायुधम् । श्रीवत्सलक्ष्मं गलशोभिकौस्तुभं पीताम्बरं सान्द्रपयोदसौभगम् ॥ ९ ॥

tam adbhutam bālakam ambujekṣaṇam catur-bhujam śaṅkha-gadādy-udāyudham śrīvatsa-lakṣmaṁ gala-śobhi-kaustubham pītāmbaram sāndra-payoda-saubhagam

अर्थ: वसुदेव ने उस अद्भुत, कमल-नयन शिशु को देखा, जो शंख, गदा तथा अन्य आयुधों से युक्त चार भुजाएँ धारण किए हुए था, श्रीवत्स के चिह्न से अंकित, कण्ठ पर चमकती कौस्तुभ मणि, पीत वस्त्र धारण किए और घने मेघ के समान मनोहर था। (स्कन्ध 10, अध्याय 3, श्लोक 9-10)

श्रीहरि को अपने पुत्र के रूप में देखकर आनन्द में मग्न, और विस्मय से नेत्र विस्फारित किए हुए, वसुदेव ने मन ही मन इस अवतरण के उत्सव में ब्राह्मणों को दस हजार गौएँ दान कर दीं। सूतिका-गृह को प्रकाशित करने वाले उस शिशु को स्वयं भगवान् विष्णु के रूप में पहचानकर, और अपने भय के पूर्णतः दूर हो जाने पर, वे हाथ जोड़े और विनम्रता से शरीर झुकाए उनकी स्तुति करने लगे।

वसुदेव की स्तुति

वसुदेव ने प्रार्थना की कि उन्होंने इस शिशु को साक्षात् परम पुरुष के रूप में जान लिया है, जो प्रकृति से परे विद्यमान है, शुद्ध चेतन आनन्द से युक्त है, प्रत्येक बुद्धि का साक्षी है।

श्रीवसुदेव उवाच विदितोऽसि भवान् साक्षात्पुरुषः प्रकृतेः परः । केवलानुभवानन्दस्वरूपः सर्वबुद्धिदृक् ॥ १३ ॥

śrī-vasudeva uvāca vidito 'si bhavān sākṣāt puruṣaḥ prakṛteḥ paraḥ kevalānubhavānanda-svarūpaḥ sarva-buddhi-drk

अर्थ: श्रीवसुदेव ने कहा: आप मुझे साक्षात् परम पुरुष के रूप में विदित हैं, जो प्रकृति से परे हैं, जिनका स्वरूप ही अखण्ड चेतन आनन्द है, जो समस्त बुद्धि के द्रष्टा हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 3, श्लोक 13)

उन्होंने सस्वर इस रहस्य पर विचार किया कि यद्यपि भगवान् सृष्टि में और अब देवकी के गर्भ में प्रविष्ट प्रतीत होते हैं, वास्तव में उन्होंने कभी किसी वस्तु में प्रवेश नहीं किया, क्योंकि वे सर्वव्यापी हैं और समस्त कारणों के कारण रूप में सर्वत्र निवास करते हैं। जैसे महाभूत उस विश्व में प्रविष्ट प्रतीत होते हैं जिसे वे उत्पन्न करते हैं यद्यपि वे उसमें पहले से ही विद्यमान रहते हैं, वैसे ही भगवान् केवल सीमित प्रतीत होते हैं। वसुदेव ने भगवान् द्वारा अपनी सृजन-इच्छा से धारण किए जाने वाले तीन वर्णों की स्तुति की — जगत् के पालन के लिए श्वेत, सृष्टि के लिए रक्त, और संहार के लिए श्याम — और आनन्दित हुए कि वही भगवान् अब उनके ही घर में विश्व की रक्षा के लिए अवतरित हुए हैं।



विस्मय से भय घुल जाने पर वसुदेव हाथ जोड़कर शिशु की स्तुति करते हैं, प्रार्थना करते हुए कि भगवान् जगत् की रक्षा हेतु उनके घर अवतरित हुए हैं (श्लोक 12-21)।

त्वमस्य लोकस्य विभो रिरक्षिषु- गृहेऽवतीर्णोऽसि ममाखिलेश्वर । राजन्यसंज्ञासुरकोटियूथपै- निर्व्यूह्यमाना निहनिष्यसे चमूः ॥ २१ ॥

tvam asya lokasya vibho rirakṣiṣur gr̥he 'vatīrṇo 'si mamākhileśvara rājanya-samjñāśura-koṭi-yūthapair nirvyūhyamānā nihaniṣyase camūḥ

अर्थ: हे सर्वव्यापी सबके ईश्वर, इस जगत् की रक्षा की इच्छा से आप मेरे घर में अवतरित हुए हैं; और आप उन असंख्य दैत्य-सेनानायकों द्वारा सजाई गई सेनाओं का संहार करेंगे जो राजपुत्रों के नाम से प्रसिद्ध हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 3, श्लोक 21)

फिर भी अपने हर्ष में भी वसुदेव शिशु के लिए भय से ग्रस्त हो उठे, यह जानते हुए कि कंस, जिसने भगवान् के बड़े भाइयों का वध किया था, जन्म का समाचार पाते ही उठे हुए शस्त्रों के साथ दौड़ पड़ेगा।

देवकी की स्तुति

अपने पुत्र को भगवान् विष्णु के चिह्नों से युक्त देखकर, देवकी — जो अब तक कंस से भयभीत थीं — प्रसन्नता से मुस्करा उठीं और अपनी स्तुति अर्पित की। उन्होंने शिशु को स्वयं भगवान् विष्णु के रूप में महिमामण्डित किया, वह स्वयंप्रकाश सत्य, अव्यक्त और अविकारी कारण जिसे वेद प्रकृति के तीन गुणों से परे बताते हैं।

श्रीदेवक्युवाच रूपं यत् तत् प्राहुरव्यक्तमाद्यं ब्रह्म ज्योतिर्निर्गुणं निर्विकारम् । सत्तामात्रं निर्विशेषं निरीहं स त्वं साक्षाद् विष्णुरध्यात्मदीपः ॥
२४ ॥

śrī-devaky uvāca rūpaṁ yat tat prāhur avyaktam ādyaṁ brahma jyotir nirguṇaṁ nirvikāram sattā-mātraṁ nirviśeṣaṁ nirīhaṁ sa tvaṁ sākṣād viṣṇur adhyātma-dīpaḥ

अर्थ: श्रीदेवकी ने कहा: वह आदि रूप जिसे मनीषी अव्यक्त, तेजोमय ब्रह्म, गुणों से परे, अविकारी, शुद्ध सत्तामात्र, निर्विशेष तथा निश्चेष्ट कहते हैं — वही भगवान् आप हैं, स्वयं विष्णु, अन्तरात्मा के दीपक। (स्कन्ध 10, अध्याय 3, श्लोक 24)

देवकी ने काल के स्वामी के रूप में उनकी शरण ली, जिनकी प्रेरणा से लोक अपनी चक्रीय गति चलाते हैं और जिनमें महाप्रलय के समय समस्त वस्तुएँ विलीन हो जाती हैं जब तक केवल वे ही शेष रह जाते हैं, जिन्हें शेष कहा जाता है। उन्होंने प्रार्थना की कि वे अपने भक्तों की भयंकर कंस से रक्षा करें। फिर, माता के भय से प्रेरित होकर, उन्होंने विनती की कि वे अपना चतुर्भुज, शस्त्रधारी रूप समेट लें और अपनी दिव्यता उस क्रूर राजा पर प्रकट न करें — कहीं कंस उनके जन्म को जान न ले — और आश्चर्य किया कि जो प्रलय के समय समस्त विश्व को अपनी देह में धारण करते हैं, उन्होंने उनके ही छोटे-से शिशु रूप में प्रकट होना चुना।

भगवान् अपने पूर्व अवतरणों का स्मरण कराते हैं

उत्तर में भगवान् ने देवकी को उनके सम्बन्ध के सुदीर्घ इतिहास को उद्घाटित करते हुए सान्त्वना दी। एक पूर्व युग में, स्वायम्भुव मन्वन्तर में, वे पृथ्वी थीं और वसुदेव निर्दोष तपस्वी सुतपा थे। ब्रह्मा द्वारा सन्तान उत्पन्न करने का आदेश पाकर, उस दम्पति ने अत्यन्त कठोर तपस्या की — वर्षा, आँधी, धूप और हिम को सहते हुए, सूखे पत्तों पर और केवल वायु पर निर्वाह करते हुए, प्राणायाम द्वारा अपने मन को शुद्ध करते हुए — बारह हजार दिव्य वर्षों तक, अटल भक्ति से भगवान् की आराधना करते हुए।



भगवान् देवकी को उनके पूर्व जीवन — पृथ्वी तथा तपस्वी सुतपा — और अपने पूर्व अवतरणों पृथ्विगर्भ तथा वामन का स्मरण कराकर सान्त्वना देते हैं (श्लोक 32-45)।

प्रसन्न होकर भगवान् प्रकट हुए और उन्हें कोई भी वर माँगने को कहा, और वे, अब भी उनकी माया से बँधे और मुक्ति का स्वाद न पाए हुए, केवल अपने ही समान एक पुत्र माँग बैठे। सम्पूर्ण जगत् में अपने समान किसी को न पाकर, भगवान् स्वयं उनके पुत्र बने, जो पृथ्विगर्भ के नाम से जाने गए। एक परवर्ती युग में वे पुनः उसी दम्पति को — अब अदिति और ऋषि कश्यप के रूप में — दिव्य वामन के रूप में जन्मे, जिन्हें उपेन्द्र भी कहा जाता है। और अब, तीसरी बार, वे उसी रूप में उनके पास पुनः आए हैं, ताकि उनका वचन सत्य सिद्ध हो।

तृतीयेऽस्मिन् भवेऽहं वै तेनैव वपुषाथ वाम् । जातो भूयस्तयोरेव सत्यं मे व्याहृतं सति ॥ ४३ ॥

tṛtīye 'smin bhavē 'ham vai tenaiva vapuṣātha vām jāto bhūyas tayor eva satyaṁ me vyāhṛtaṁ sati

अर्थ: हे सती, इस तीसरे जन्म में मैं पुनः उसी रूप में तुम दोनों के यहाँ जन्मा हूँ; मेरा वचन सदैव सत्य है। (स्कन्ध 10, अध्याय 3, श्लोक 43)

उन्होंने समझाया कि उन्होंने यह चतुर्भुज रूप इसलिए दिखाया कि उन्हें अपने पूर्व अवतरणों का स्मरण हो, क्योंकि उनकी वास्तविक पहचान एक साधारण मानव-सदृश रूप से नहीं जानी जा सकती थी; और उन्होंने वचन दिया कि उन्हें — अपने पुत्र के रूप में और सर्वव्यापी भगवान् के रूप में — प्रेम से निरन्तर स्मरण करने पर दोनों उनके साथ परम मिलन को प्राप्त होंगे।

भगवान् का साधारण शिशु बनना

इतना कहकर भगवान् मौन हो गए, और तत्क्षण, अपने माता-पिता के देखते ही देखते, अपनी अचिन्त्य शक्ति से उन्होंने एक साधारण मानव-शिशु का रूप धारण कर लिया।

श्रीशुक उवाच इत्युक्त्वासीद्धरिस्तूष्णीं भगवानात्ममायया । पित्रोः सम्पश्यतोः सद्यो बभूव प्राकृतः शिशुः ॥ ४६ ॥

śrī-śuka uvāca ity uktvāsīd dharis tūṣṇīm bhagavān ātma-māyayā pitroḥ sampasṛyatoḥ sadyo babhūva prākṛtaḥ śiśuḥ

अर्थ: श्रीशुक ने कहा: इतना कहकर भगवान् श्रीहरि मौन हो गए, और अपनी दिव्य शक्ति से, अपने माता-पिता के देखते ही देखते, तत्क्षण एक साधारण शिशु बन गए। (स्कन्ध 10, अध्याय 3, श्लोक 46)

उसी घड़ी, गोकुल में, योगमाया — भगवान् की योगशक्ति, जो स्वयं अजा अर्थात् अजन्मा कहलाती हैं — नन्द की पत्नी की पुत्री रूप में जन्म ले चुकी थीं।

गोकुल की यात्रा

अब, योगमाया की शक्ति से, कारागार के पहरेदार अपनी चेतना खो बैठे और नगरवासी गहन निद्रा में डूब गए, और प्रत्येक द्वार, यद्यपि विशाल कपाटों से बन्द और लोहे की जंजीरों से जकड़ा हुआ था, स्वयमेव खुल गया। वसुदेव ने शिशु को उठाया और उस तूफानी रात्रि में बाहर ले चले। जैसे-जैसे वे बढ़ते गए, अनन्त शेष पीछे-पीछे चलते हुए भगवान् के ऊपर अपने फणों को छाते के समान फैलाकर गिरती वर्षा से रक्षा करते रहे, जबकि इन्द्र ने यात्रा को दृष्टियों से छिपाने हेतु वर्षा की। जब वसुदेव बाढ़ग्रस्त यमुना पर पहुँचे, तब नदी उतर गई और उन्हें मार्ग दे दिया, जैसे कभी समुद्र ने श्रीराम के लिए मार्ग दिया था।



वसुदेव शिशु भगवान् को बाढ़ग्रस्त यमुना के पार ले जाते हैं, जो उन्हें मार्ग देने के लिए उतर जाती है, जबकि अनन्त शेष वर्षा से रक्षा हेतु अपने फण फैला देते हैं (श्लोक 48-51)।

व्रज में नन्द के गोप-ग्राम पहुँचकर, वसुदेव ने समस्त गोपों को योगमाया की निद्रा में गहरे सोया पाया। उन्होंने अपने पुत्र को धीरे से यशोदा की शय्या पर रखा, बदले में उनकी नवजात पुत्री को ले लिया, और कारागार लौट आए।

नन्दव्रजं शौरिरुपेत्य तत्र तान् गोपान् प्रसुप्तानुपलभ्य निद्रया । सुतं यशोदाशयने निधाय त- त्सुतामुपादाय पुनर्गृहानगात् ॥ ५१ ॥

nanda-vrajaṁ śaurir upetya tatra tāt gopān prasuptān upalabhya nidrayā sutam yaśodā-śayane nidhāya tat- sutām upādāya punar gṛhān agāt

अर्थ: नन्द के व्रज पहुँचकर और वहाँ गोपों को गहरी निद्रा में सोया पाकर, वसुदेव ने अपने पुत्र को यशोदा की शय्या पर रखा, बदले में उनकी पुत्री को ले लिया, और अपने स्थान पर लौट आए। (स्कन्ध 10, अध्याय 3, श्लोक 51)

उस दिव्य कन्या को देवकी की शय्या पर रखकर और अपने पैरों में पुनः जंजीरें बाँधकर, वसुदेव पहले की भाँति बन्दी खड़े रहे। इधर यशोदा, प्रसव से थकी और योगमाया से अभिभूत, केवल इतना ही जानती थी कि उन्हें एक सन्तान हुई है, और रात्रि के उस महान् आदान-प्रदान का उन्हें कुछ भी स्मरण न रहा।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् के आगमन पर समस्त सृष्टि आनन्दित होती है। स्वच्छ आकाश, खिलते कमल, सुगन्धित वायु, और स्वयं प्रज्वलित होती यज्ञ-अग्नियाँ यह दर्शाती हैं कि जब भगवान् अवतरित होते हैं, तब सम्पूर्ण प्रकृति चुपचाप नवीन और शान्त हो उठती है (श्लोक 1-7)।
2. भगवान् घोरतम प्रहर में प्रकट होते हैं। भगवान् ठीक अर्धरात्रि के गहनतम प्रहर में, एक कारागार में प्रकट होते हैं। उनका अवतरण सिखाता है कि कृपा ठीक वहाँ प्रवेश करती है जहाँ अन्धकार सघनतम और आशा सर्वाधिक बँधी हुई प्रतीत होती है (श्लोक 8)।

3. भक्ति भय को स्तुति में बदल देती है। वसुदेव और देवकी दोनों कंस के भय से विस्मय और आराधना की ओर बढ़ते हैं जैसे ही वे भगवान् का वास्तविक दर्शन करते हैं। उन्हें पहचानना भय को घोल देता है और स्तुति को जगा देता है (श्लोक 12-31)।

4. भगवान् अपने भक्तों के प्रति जन्म-जन्मान्तर तक निष्ठावान् रहते हैं। पृथ्वी और सुतपा का स्मरण कराकर भगवान् दर्शाते हैं कि तपस्या और प्रेम के साथ धारण की गई उनके लिए सच्ची अभिलाषा कभी विस्मृत नहीं होती — वे उनके पास बार-बार लौटते हैं जो उन्हें खोजते हैं (श्लोक 32-45)।

5. भगवान् की रक्षा अदृश्य साधनों से कार्य करती है। सोए हुए पहरेदार, खुलते द्वार, शेष के छायादायी फण, और मार्ग देती यमुना यह प्रकट करते हैं कि जब भगवान् कार्य करते हैं, तब प्रत्येक बाधा चुपचाप झुक जाती है (श्लोक 46-53)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इसमें कुछ अत्यन्त हृदयस्पर्शी हैं कि समस्त लोकों के स्वामी, अपनी चतुर्भुज महिमा को प्रकट करने के पश्चात्, स्वेच्छा से स्वयं को एक असहाय नवजात के रूप में समेट लेते हैं। वही हाथ जो चक्र और शंख धारण करते हैं, एक शिशु के छोटे हाथ बन जाते हैं जिसे वर्षा में उठाकर ले जाना पड़ता है। दिव्यता माता-पिता को अभिभूत नहीं करती; वह स्वयं को उनके प्रेम को सौंप देती है। यही सम्पूर्ण दशम स्कन्ध के हृदय की कोमलता है: परम भगवान् अपनी शक्ति केवल इतनी देर के लिए प्रकट करते हैं कि पहचाने जा सकें, और फिर उसे एक शिशु के रूप में प्रेम पाने हेतु एक ओर रख देते हैं। सम्भवतः इसी प्रकार वे आज भी हमारे पास आते हैं — हमें अपनी महानता का बस इतना दर्शन कराते हुए कि हमारी श्रद्धा जागे, और फिर कोमलता से केवल इतना माँगते हुए कि उन्हें हृदय से लगाकर स्नेह किया जाए। कृष्ण-जन्म की वह रात्रि हमें निमन्त्रण देती है कि हम उन्हें भय से नहीं, अपितु वसुदेव और देवकी के शान्त, विस्मयपूर्ण आनन्द से ग्रहण करें।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज रात, सोने से पूर्व, स्मरण करें कि भगवान् ने अपने अवतरण के लिए अर्धरात्रि का घोरतम प्रहर चुना। अन्धकार में एक शान्त क्षण लें — चिन्ता और विक्षेप को एक ओर रखकर — और एक छोटी प्रार्थना अर्पित करें, भगवान् का अपने हृदय में स्वागत करते हुए, जैसे देवकी ने उनका जगत् में स्वागत किया। उस क्षण की शान्ति को अपना ही छोटा-सा गोकुल बनने दें। आरम्भ करने से पूर्व जपें: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।”

उपसंहार

दशम स्कन्ध का तृतीय अध्याय उस चिर-प्रतीक्षित अवतरण को उसकी पूर्णता तक ले आता है। सृष्टि स्वयं तेजोमय और शान्त हो उठती है; अर्धरात्रि के प्रहर में परम भगवान् वसुदेव और देवकी के समक्ष अपनी चतुर्भुज महिमा में प्रकट होते हैं; दोनों माता-पिता, अपने भय के घुल जाने पर, उनकी स्तुति करते हैं; भगवान् उनके पूर्व जन्मों की भक्ति का स्मरण कराते हैं और उन्हें अपने साथ मिलन का आश्वासन देते हैं; और फिर, एक साधारण शिशु बनकर, वे शेष के फणों से सुरक्षित, मार्ग देती यमुना को पार कर गोकुल पहुँचाए जाते हैं, जबकि पहरेदार सोए रहते हैं और द्वार स्वयमेव खुल जाते हैं। एक ही रात्रि में, पृथ्वी का भार उतरने लगता है और व्रज का आनन्द गति पकड़ लेता है। आने वाले अध्यायों में, गोकुल का वह शिशु उन अनुपम लीलाओं का आरम्भ करेगा जिन्होंने चिरकाल से भक्तों को आनन्दित किया है।

श्रीमद्भागवतम् का यह दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), तृतीय अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी और लिप्यन्तरण में दिए गए हैं तथा उनके अर्थ सारांश रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा किसी सम्बद्धता अथवा समर्थन का कोई संकेत अभिप्रेत नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-3-birth-of-lord-krishna-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट